3
सेनापति
(जन्म : संवत् 1616)

जीवन परिचय –

सेनापति का जन्म दीक्षित गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में विक्रम संवत् 1616 में हुआ। उनके पिता का नाम गंगाधर और पितामह का नाम परशुराम दीक्षित था। उनके विद्यागुरू हीरामणि दीक्षित थे। वे बहुत ही आत्मविश्वासी थे। अपना परिचय देते हुए एक स्थान पर इन्होंने कहा है –

"सेनापति सोई, सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै, सुनत कविताई है।"

ये रीतिकाल के महान एवं भावप्रवण कवि माने जाते हैं। कुछ लोगों का कथन है कि सेनापति इनका उपनाम या उपाधि है किन्तु इनका मूल नाम किसी को भी ज्ञात नहीं है। परन्तु इस बात में कतई संदेह नहीं है कि काव्य–कला और मौलिकता की दृष्टि से युगीन कवियों में वे सेनापति की भाँति थे। सेनापति रामभक्त कवि थे। श्लेष अलंकार के प्रयोग में वे सिद्धहस्त थे। उन्होंने किसी कवि का अनुसरण नहीं किया। ये रीतिबद्ध कवियों की श्रेणी में आते हैं। इनकी दो रचनाएँ प्रसिद्ध हैंः– 'काव्यकल्पद्रुम' तथा 'कवित्त रत्नाकर'। काव्यकल्पद्रुम, जो अप्राप्य है इनका काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ रहा होगा। इनके कवित्तों में अलंकार और रसध्वनि के उदाहरण एक से बढ़कर एक मिलते हैं। इन्होंने अलंकार संप्रदाय का अनुसरण किया।

सेनापति ब्रजभाषा के कवि हैं। साधारण शब्द भी उनके हाथ में आते ही सैनिक की भाँति सशक्त बन जाते हैं। वे फारसी शब्दों का प्रयोग भी करते थे। उनकी रचनाओं में प्रसाद और ओज गुण की प्रधानता है। परिमार्जित भाषा का प्रयोग और भावगांभीर्य उनके काव्य की विशेषता है।

पाठ–परिचय –

यहाँ प्रस्तुत कविता सेनापति के ऋतुवर्णन का प्रौढ़ और प्रांजल नमूना है। इनमें पूरी निपुणता से ऋतु के उपादनों एवं उसके लक्षणों का उपयोग कवि ने किया है। वसन्त का वैभव पूरी छटा के साथ पंक्तियों में पिरोया गया है। कवि ने ऋतु वसन्त का सूक्ष्मतापूर्वक मानवीकरण किया है। पूरा परिदृश्य राजा के आगमन काल के वस्तुओं एवं भावनाओं से बुना गया है। रंगीन उपवन सुगन्धमय है। कोकिल चारण की भूमिका में पदगान कर रहा है। शोभा के सुखमय उपकरण सेना के कवायद की छवि उत्पन्न कर रहा है; क्योंकि राजा एकाकी गमन नहीं करता है। इसी तरह भीषण ग्रीष्म के बाद झुलसी हुई प्रकृति पर जब वर्षा की बूँदें पड़ती हैं तो धरती नयनाभिराम एवं सुखमय हो जाती है। मानसून का आगमन इस कृषि प्रधान

देश के लिए एक उत्सव की तरह होता है। कवि ने डूब कर बरसात के ऋतु चक्र को आँखों के आगे साकार कर दिया है। शीत ऋतु की आक्रामकता को सेनापति के आचरण में कवि ने वर्णित किया है। इस हमले ने पूरी प्रकृति को पराजित कर दिया है। बर्फीली हवा की चुभन तीर के समान घातक हैं। सूरज का तेवर निस्तेज पड़ गया है। अलाव की आग को घेर कर जन समुदाय ठिठुर रहे हैं। देशज समाज पर ऋतुओं के प्रभाव का इतना जीवन्त वर्णन ही सेनापति को कालजयी कवि बनाता है।

ऋतु वर्णन

बरन बरन तरू फूले उपबन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियतु है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियतु हैं।
आवै आस–पास पुहूपन की सुबास सोई,
सोने के सुगंध माँझ सने रहियतु हैं।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख–साज, आज,
आवत बसंत रितुराज कहियतु है।।
देखैं छिति अंबर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरबर सब ही कौं रूप हर्‌यौ है।
महाझर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सेक मानों पर्‌यौ है।
दारून तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित्त धर्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जू,
ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।
दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम
घटा की झमक अति घोर घनघोर तैं।
कोकिला, कलापी कल कूजत हैं जित–तित,
सीकर ते सीतल समीर की झकोर तैं।
सेनापति आवन कह्‌यो है मनभावन सु
लाग्यौ तरसावन विरह–जुर जोर तैं।
आयौ सखी सावन, मदन सरसावन,
लग्यौ है बरसावन सलिल चहुँ और तैं।।

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ्यौ दल,
निबल अनल, गयौ सूरि सियराइ कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रहीहै गरम भौन कोनन मैं जाइ कै।
धूम नैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिए सौं लगाई रहैं नैंक सुलगाई कै।
मानो भीत जानि महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।

कठिन शब्दार्थ

बरन बरन	–	विभिन्न रंगों के
चतुरंग	–	चारों अंगों वाली सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ एवं पैदल सैनिक शामिल हों, पुहूपन–फूल, माँझ–मध्य में
छिति	–	पृथ्वी,
झर	–	(1) ताप, (2) झड़ी
भादव	–	(1) जंगल की आग की तरह, (2) भादों का महीना
तरनि	–	(1) सूर्य, (2) नौका
दामिनी	–	बिजली
कलापी	–	मोर
सीकर	–	जल की बूँदें
विरह जुर	–	विरह का बुखार
मदन	–	कामदेव
निबल	–	शक्तिहीन
सूरि	–	सूर्य
सियराइ	–	ठण्डा
कोनन	–	कोने में
धूम	–	धुँआ
पानि	–	हाथ
पाउक	–	आग

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कवि ने किस ऋतु को 'रितुराज' कहा है?
   (क) हेमन्त (ख) शिशिर (ग) ग्रीष्म (घ) वसन्त

2. सुरचाप का अर्थ है –
   (क) इन्द्रधनुष (ख) देवता (ग) अर्धवृत्त (घ) घटा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. कविता में बंदीजन किसे कहा गया है?
4. प्रिय ने किस ऋतु में वापस आने के लिए प्रेयसी को कहा था?
5. ऋतुवर्णन में ऋतुराज किसे कहा गया है?
6. 'निबल अनल' से क्या तात्पर्य है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

7. 'चतुरंग दल' से सेनापति का क्या तात्पर्य है?
8. सावन के माह में कामदेव नायिका को परेशान कैसे कर रहा है?
9. ग्रीष्म ऋतु में बादल और हवा की क्या स्थिति हो गई है?

निबंधात्मक प्रश्न –

10. सेनापति का ऋतुवर्णन हिन्दी साहित्य में अनूठा क्यों है?
11. पठित काव्यांश के आधार पर शीत ऋतु का वर्णन कीजिए।
12. वसंत ऋतु के सौन्दर्य पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) बरन बरन तरू फूले उपबन बन ....आवत बसंत रितुराज कहियतु है।।
    (ख) सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ्यौ दल............................. छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।